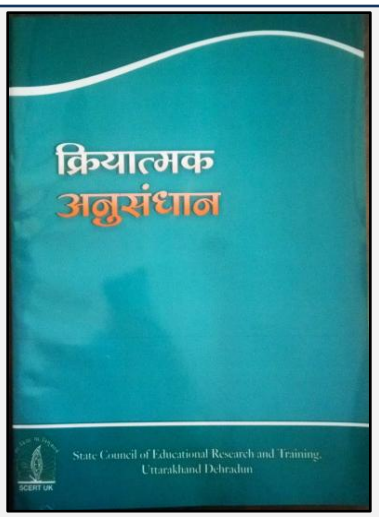

क्रियात्मक अनुसंधान
(Action Research)

समय–समय पर विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु शोध, सर्वेक्षण, अनुश्रवण, अनुसमर्थन तथा विभिन्न हितधारकों का क्षमता संवर्धन जैसी प्रक्रियाओं को सतत विस्तार दिया गया है। विद्यालयी स्तर पर गुणवत्ता में वृद्धि हेतु अध्यापकों, संस्थाध्यक्षों, शैक्षिक प्रबंधकों आदि द्वारा अपने अभ्यासों (Practices) में सुधार तथा अनुभूत समस्याओं के समाधान में क्रियात्मक अनुसंधान का बहुत महत्व है। क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा शिक्षण प्रक्रिया तथा गुणात्मक रूप से शिक्षा में सुधार लाया जा सकता है। यह आवश्यक है कि विद्यालयी स्तर पर शिक्षकों द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों के निराकरण हेतु क्रियात्मक अनुसंधान की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है ताकि वे अपने स्तर पर समस्याओं को हल कर सकें तथा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अपने अभ्यासों में सुधार कर सकें। अतः किसी समस्या के निराकरण के लिए वैज्ञानिक तरीके से समस्याओं की पहचान व उसके समाधान हेतु कार्ययोजना बनाई जानी आवश्यक है जिस हेतु क्रियात्मक शोध की भूमिका प्रासंगिक है। विद्यालयी स्तर पर निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में आने वाली कठिनाइयों के निवारण के लिए वैज्ञानिक तरीके से समस्याओं की पहचान व क्रमबद्ध जाँच की जानी आवश्यक है। उक्त के क्रम में क्रियात्मक शोध की महत्वपूर्ण भूमिका है जिसके द्वारा विद्यालयी समस्या की पहचान कर स्थानीय परिप्रेक्ष्य में प्रक्रियाओं में सुधार किया जा सकता है। प्रत्येक जनपद के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों द्वारा डायट/एस.सी.ई.आर.टी. के अकादमिक सदस्यों

के निर्देशन में विभिन्न मुद्दों यथा– शिक्षण/विषयवस्तु/कौशल इत्यादि से संबंधित चुनौतियों एवं मुद्दों पर क्रियात्मक शोध सम्पादित किए जाते हैं। इसके अंतर्गत एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड एवं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा विगत वर्षों में सम्पन्न किए गए क्रियात्मक अनुसंधानों को प्रसारित करने के साथ ही एक मंच पर विभिन्न क्रियात्मक शोधों से संबंधित सूझ विकसित करने हेतु तथा उत्कृष्ट स्तर के क्रियात्मक शोधों एवं अन्य शोध कार्यों के बारे में जागरूक करने तथा अंतर्दृष्टि विकसित करने हेतु समय–समय पर शिक्षकों का एवं डायट के संकाय सदस्यों का अभिमुखीकरण किया जाता है।